बाईबल पढ़ना 8: पश्चाताप (तोबा)

पश्चाताप पहला कदम है जिससे हम मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं। जो परमेश्वर हमें प्रभु यीशु मसीह में देता है। "पश्चाताप करना" का अर्थ है अपनी जिन्दगी के पहले रास्ते से वापिस मुड़ना और पूरी तरह नई दिशा में जाना–नए सिरे से अच्छा और जिम्मेदारी से व्यवहार करना! यह निश्चय करना कि अपने असफल, पापों से भरे हुए पुराने समय को पीछे छोड़ना ना कि उसको लगातार जारी रखने का निश्चय करना जिस तरह आप यीशु(परमेश्वर) की संगति में झुके हुए हो।

"---------- उपरंत इसराएल का घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसे प्रभु और मसीह दोनों ही ठहराया। इसी यीशु को जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया।"

"उन्होने जब यह सुना तो उनके हृदय छिद गए और वह पतरस तथा अन्य प्रेरितों से पुछने लगे, "भाईयों, हम क्या करें?"

"पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओं और यीशु मसीह के नाम से तुम में से प्रत्येक बपतिस्मा ले कि तुम्हारें पापों की क्षमा हो, और तुम पवित्र आत्मा का वरदान पाओगें। (प्रेरितों के कार्य 2:36–38) यह भी देखें (17:30)

क. पश्चाताप क्या नही है।

1) **केवल दोषी महसूस नही करना**

पश्चाताप आने से पहले अपने पापों को महसूस करना, परन्तु यह पश्याताप नहीं है। तब तक कोई प पश्चाताप नहीं कर सकता जब तक पहले अपने पापों के बारे खुद को दोषी महसूस नहीं कर लेते, पर सभो नहीं जो दोषी महसूस करते हैं कि उन्होंने सच्चाई में पश्चाताप किया है। "जब वह धार्मिकता, संयम और

होने वाले न्याय की चर्चा कर रहा था तो फेलिक्स ने भयभीत होकर कहा, इस समय तो तु जा। समय मिलने पर मैं तुझे फिर बुलाऊगाँ।" (प्रेरितों के काम 24:25) फेलिक्स ने दोषी महसूस किया लेकिन पश्चाताप नहीं किया।

2)केवल अपने पापों के लिए क्षमा मांगना ही नहीं।

कई लोग अपनी गलती मानते हैं क्योंकि वह अपने पापों के फल के कारण पकड़े गए हैं। बहुत लोग गलती मानते हैं, उसके लिए नहों जो उन्होंने गलत किया है, परन्तु उस जुर्माने (सज़ा) के लिये जो उन्होंने पकड़े जाने के लिए प्राप्त की है।

"क्योंकि परमेश्वर की इच्छानुसार जो दु:ख होता हैं वह ऐसा पश्चाताप उत्पन्न करता हैं जिसका परिणाम उद्धार हैं, और जिसमें पछताना नहीं पड़ता; परन्तु संसारिक शोक तो मृत्यु उत्पन्न करता है।"

3)केवल अच्छा आदमी बनने की कोशिश करना ही नहीं

बहुत लोग अपने बल के साथ अच्छा व्यक्ति बनने तथा अपनी जिन्दगी के रास्ते (मार्ग) को बदलने की कोशिश करते हैं। कोई भी अपनी कोशिश जो अपनी धार्मिकता की जड़ है जो पापों से पश्चाताप करने की जरूरत को नहीं मानता।

"हम तो सब के सब अशुद्ध मनुष्य के से हैं, और हमारे धर्म के काम सब के सब मैले चिथड़ों के समान हैं। हम सब के सब पत्ते की नाई मुर्झा जाते हो, और हमार अधर्म के कामों ने हमें वायु की नाई उड़ा दिया है।"

(यसायाह 64:6)

4) धार्मिक बनना ही नहीं

परन्तु जब उसने बहुत-से फरीसियों और सद्कियों के बपतिस्मा लेने के लिए आते देखा तो उनसे कहा;"हे सांप के बच्चों, तुम्हें किसने सचेत कर दिया कि आने वाले प्रकोप से भागों ?

देखें: (मत्ती 3:7-10)

5)केवल सच्चाई को जानना ही नहीं

सच्चाई की दिमागी जानकारी होना जरूरी जिम्मेदारी नहीं है, सच्चाई हरेक के जीवन में असल में प्रगट हो चुकी है। दिमाग से विश्वास करना और दिल से विश्वास करना अलग हैं।

(देखें: रोमियों 10:10)

"तुम्हारा विश्वास है कि परमेश्वर एक ही हैं तो तुम ठीक करते हो: दुष्टात्माएँ भी विश्वास करती और थरथराती हैं"

"परन्तु हे मूर्ख, क्या तुँ इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं कि कार्य के बिना विश्वास व्यर्थ हैं?"

(याक्ब 2:19,20)

(ख) **सच्चा** पश्चाताप **(तोबा) क्या है?**

1. **परमेश्वर से अपने पापों की क्षमा**

सच्ची तोबा किसी एक के प्रति क्षमा नहीं बल्कि सभी के प्रति हैं, परन्तु पहली तथा महत्त्वपूर्ण, यह परमेश्वर के प्रति सच्ची क्षमा है।

(भजन संहिता 51:1-4)

यह भी देखें (भजन संहिता 38:8)

2. **अपने पापो के बारे में सच्चे होना**

हमें अपने पापों को देखने की जरूरत है "पाप" क्या है तथा प्रभु के आगे कबुल करने से पहले।

"जब मैंने अपना पाप तुझ पर प्रगट किया और अधर्म न छिपाया, और कहा मैं यहोवा के साम्हने अपन अपराधों को मान लूगा; तब तु ने मेरे अधर्म और पार को क्षमा कर दिया।।(सेला) भजन संहिता(32:5)

यह भी देखें 1यूहन्ना (1:19)

3. **अपने पापों से दुर मुड़ना**

यह केवल नहीं है कि अपने पापों को कबुल करना लेकिन यह निश्चय करना कि इनको दोबारा नहीं करेंगे।

"जो अपने अपराध छिपा रखता है, उसका कार्य सफल नहीं होता , परन्तु जो उनको मान लेता और छोड़ भी देता है; उस पर दया भी की जाएंगी।

(नीतिवचन 28:13)

4. **पापों से नफरत**

"तुने धर्म के प्रेम और अधर्म से बैर रखा इस कारण परमेशवर तेरे परमेश्वर ने तेरे साथियों से बढ़कर हर्षरूपी तेल से तुझे अभिषेक किया। (इब्रानियों 1:9)

यह भी देखें (यहेजकेल 20:43,44)

5. **जब संम्भव हो, दूसरों को मोड़ना, जो तुमने उधार लिया**

जब संम्भव हो, दुसरों से क्षमा पूछे जाने पर आपको खुद गलती या किये हुए पापों के लिए जुर्माना देने के ज़रुरत है। सच्चा पश्चाताप (तोबा) दिखाए।

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

"जक्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा, "प्रभु देख, मैं अपनी आधी सम्पत्ति कगालों को दे दूँगा, और यदि मैंने किसी से अन्याय करके कुछ भी लिया हैं तो उसे चौगुना लौटा दूँगा।"

(लुका 19:8)

यह भी देखें (निर्गमन: 6:1-7)

(ग) **पश्चाताप में क्या शामिल हैं**

1. **अपने पापों से मुड़ना**

"अपने पुरखाओं के समान न बनों , उन से तो अगले भविष्यद्वक्ता यह पुककार पुकारकर कहते थे कि सेनाओं का यहोवा यों कहता हैं, अपने बुरे मार्गों से, और अपने बुरे कामों से फिरों; परन्तु उन्हों ने न तो सुना, और न ही मेरी ओर ध्यान दिया, यहोवा की यही वाणी है।

(ज़कर्याह 1:4)

पढ़ें : (गलातियाँ 5:19-21 तथा इफिसियों 5:5)

जो पाप की बात करते हैं वो तुम्हें परमेश्वर के राज्य के अधिकारी बनने से रोकते हैं। यहाँ चेतावनी यह है कि इन बुराइयों से मुड़े।

2. **संसार से मुड़ना**

"संसार से प्रेम न करो, और न उन वस्तुओं से जो संसार में है। यदि कोई संसार से प्रेम करता है तो उसमें पिता का प्रेम नहीं हैं।

(1 यूहन्ना 2:15)

यह भी देखें (याकूब 4:4)

याकूब कहता है कि संसार के साथ मित्रचारा परमेश्वर के साथ वैर है।

3. **अपने आप से मुड़ना**

"और वह सब के लिए मरा कि वे जीवित हैं आगे को अपने के लिए न जीएं परन्तु उसके लिए जीएं, जो उनके लिए मरा और फिर जी उठा।

(2 कुरिंथियों 5:15)

यह भी देखें (लूका 14:26, हां, इसे करें खुद का इन्कार करने के साथ।

4. **शैतान से मुड़ना**

"कि तू उनकी आँखो को खोले जिससे कि वे अंधकार से ज्योति की ओर तथा शैतान के राज्य से परमेश्वर की और फिरे जिससे कि वे पापों की क्षमा और उन लोगों के साथ उत्तराधिकार प्राप्त करें जो मुझ पर विश्वास करने के द्वारा पवित्र हुए हैं।

(प्रेरितों के कार्य- 26:18)

देखें : (कुलुस्सियों 1:13)

5. **परमेश्वर की ओर मुड़ना**

"इसलिए तु इन लोगों से यह कह, सेनाओं का यहोवा कहता है; तुम मेरी ओर फिरो, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है, तब मैं तुम्हारी और फिरूँगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।"

(जर्कयाह 1:3)

6. **सही जीवन की और मुड़ना**

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

"और न अपने शरीर के अंगो को अधर्म के हथियार बना कर पाप को सौपो; परन्तु आप को मृत्कों में से जीवित जानकर अपने अंगो को धार्मिकता के हथियार होने के लिए परमेश्वर को सौंप दो।"

(रोमियो 6:13)

आप गीत की कुछ पंक्तियों पर प्रकाश डाल सकते हैं। "यीशु के पीछे मैं चलने लगा।" जिस तरह हम अपनी शिक्षा के परिणाम पर पहुंचते है।

यीशु के पीछे मैं चलने लगा,

ना लौटुँगा, ना लौटुँगा,

दुनिया को छोड़ कर सलीब को ले कर,

अगर कोई मेरे साथ न आए, मैं यीशु

के पीछे चलुँगा, न लौटुँगा, न लौटुँगा

दिया गया कार्य:

1. क्या आपकी जिन्दगी में कोई पाप है जिस से आपने असल में पश्चाताप (तोबा) नहीं किया? आप पवित्र आत्मा को अपने मन में आने की इज़ाजत दीजिए। किसी भी पाप के चले जाने से घबराओं न, इनसे मुड़ो तथा नई दिशा में जाने का निश्यच (फैसला) करो। प्रभु को क्षमा, सफाई तथा अपनी जिन्दगी की अगवाई करने के लिए पुछों।

2. रोमियों 6:13 दोवारा पढ़ें। तथा रोमियों 12:1-2से मिलाओ। हम सभी सदस्य प्रार्थना पुर्वक वायदा करें, अपने शरीर का आत्म सर्मपण तथा पवित्र करें और उसकी तारीफ करें।

याद रखने योग्य वचन

1) 2 कुरिन्थियों 7:10

2) यशायाह 64:6

3) नीतिवचन 28:13

4) याकूब 4:4

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

बाइबिल पढ़ना 9: विश्वास

विश्वास सदा के लिए यीशु के चेले होने का निशान है। पुराने चेले विश्वासी कहलाते थे। यीशु ने उससे कहा, "क्या? यदि तू कर सकता है। विश्वास करने वाले के लिए सब कुछ संम्भव है।" (मरकुस 9:23)

विश्वास का अर्थ है- पूरी तरह परमेश्वर पर निर्भर होना। जब आदम ने पाप किया, वह परमेश्वर की आज्ञा से बाहर निकल चुका था तथा अन-आज्ञा में चला गया (जो अंध-विश्वास है)। इसका कारण है परमेश्वर ने फैसला लिया कि यह ही विश्वास की महत्ता है। विश्वास ही वह मांग है जिससे हम परमेश्वर के सम्बन्ध में वापस आते हैं। (परमेश्वर के ऊपर निर्भरता)

यह निर्भरता परमेश्वर के ऊपर विश्वास कहलाती है। विश्वास हमें आगे बढ़ाता है। आपकी पाँच ज्ञान इंद्रीयों से बाहर जो हैं- देखने, सुनने, स्वाद, सूंघने, छूने। विश्वास हमें हमारी सीमित हदों में से निकालता है। विश्वास के द्वारा आप अपनी योग्यता से उसकी योग्यता में जाते हो।

"उसने उनसे कहा, "अपने विश्वास की कमी के कारण, क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूँ कि यदि तुम में राई के दाने के बराबर भी विश्वास हो तो इस पहाड़ से कहोगे, यहां से हटकर वहाँ जा, "और वह हट जाएंगा, और तुम्हारे लिए कुछ भी असम्भव नहीं होगा।।" मत्ती (17:20)

(क) विश्वास क्या है?

विश्वास एक आज्ञाकारी का कार्य उसके जवाब में जो परमश्वर कहता है। सच्चा विश्वास दर्शाता:- (1) आज्ञाकारी, (2) जवाब देना, (3) परमेश्वर का

वचन सुनना (आवाज सुनना)। "विश्वास तो आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।"

(इब्रानियों 11:1)

विश्वास का अर्थ विश्वास होना, निश्यच या दूसरों के ऊपर विश्वास होना या उसके शब्दों के ऊपर। परमेश्वर में विश्वास होने में शामिल हैं अपने विश्वास को परमेश्वर के विश्वास में बदलना। हम खुद के विश्वास को रोकते हैं और उसके ऊपर विश्वास करते हैं। हम अपनी सीमित हदों की जानकारी के ऊपर निर्भरता को छोड़ देते हैं और उसकी असीमित हदों को प्राप्त करना शुरू करते हैं।

(ख) दो तरह की जानकारी

"और मेरा वचन और मेरा प्रचार ज्ञान को मानने वाली बातों के साथ नहीं बल्कि आत्मा और समर्था के प्रमाण के साथ हैं।"

"तो जो आपका विश्वास मनुष्य की बुद्ध के ऊपर नहीं बल्कि परमेश्वर को स्मर्था के ऊपर ठहरे।"

"तो भी हम पुरखों के आगे ज्ञान सुनाते हैं लेकिन वह ज्ञान नहीं जो इस युग का हो तथा न ही इस युग के हाकमों का जो नाश रहे हों।"

"बल्कि परमेश्वर का गुप्त ज्ञान भेद से सुनाते हैं जिस को परमेश्वर ने युगों से पहले सभी प्रताप के लिए ठहराए।"

(1 कुरिन्थियों 2:4-7)

यह भी देखे:- 8-16

1. ज्ञान इंद्री जानकारी

सभी जानकारी कुदरती आदमी को उसके बीच ज्ञान इंद्रियों द्वारा आती हैं चो है- देखना, सुनना, स्वाद, सूंघना तथा छुना। यह सीमित जानकारी कहलाती है।

"आदमी की बुद्धि।"

2. प्रकाशित जानकारी

यह जानकारी न तो पाँच ज्ञान इंद्रियों के ऊपर न कुदरती कारणों के ऊपर आधारित हैं लेकिन दूसरी संम्भावना वाले चिन्हों के ऊपर आधारित है- जो हैं- परमेश्वर के वचन की सच्चाई। यह मनुष्य की आत्मा के द्वारा प्राप्त होती हैं जो कहलाती है "परमेश्वर की बुद्धि" जो हम विश्वास से चलते हैं, न देखने से।"

(2 कुरिन्थियों 5:7)

(ग) विश्वास के आधार

परमेश्वर में विश्वास का आधार होना तोन महत्त्वपूर्ण सच्चाइयों में हैं:-

1) परमेश्वर का स्वभाव

"जब परमेस्वर ने अब्राहम को वचन दिया तो इस कारण जो अपने से बड़ा कोई न देखा जिसकी वह शपथ खाता उसने अपनी ही शपथ खा कर कहा।"

इब्रानियों 6:13)

क) वह बदल नहीं सकता

"क्यों जो मैं यहोवा अटल हूँ। इसी कारण, हे याकूब के बेटों, तुम नहीं मरे।"

(मलाकी 3:6)

देखो याकूब 1:17 क्या कहतो है, हरेक अच्छा दान तथा हरेक पूर्ण दान ऊपर से ही है और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता हैं, जो कभी बदलता नहीं और न छाया के समान परिवर्तन शील है।

(ख) वह हार नहीं सकता

"मैं जानता हूँ भाई तूँ सब कुछ कर सकता हैं, और तेरा कोई परोजन नही कर सकता।"

(ग) वह झूठ नहीं बोल सकता

"ईश्वर मनुष्य नहीं, कि झूठ बोले, और न वह आदमी है, कि अपनी इच्छा बदले। क्या जो कुछ उसने कहा उसे न करें? क्या वह वचन देकर उसे पूरा न करे?"

(गिनती 23:19)

देखो- तीतुस 1:2

2. परमेश्वर के पुत्र का छुटकारा देने वाला काम

"और विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहे; जिस नें उस आनन्द के लिए जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दु:ख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दहिने जा बैठा।"

(इब्रानियों-12:2)

"मसीह परमेश्वर में हमारे प्यार का जरीआ बन गया है। उस मौत की पुर्नजीवित होने की सच्चाई हमारे विश्वास का आधार है।

(देखो-कुरिन्थियों 1:30)

(देखो-रोमियों 5:12)

विश्वास द्वारा न्याय। परमेश्वर लिए शांती। उसकी आशीश के रास्ते में और उसकी आशीश द्वारा हम खड़े है। कितना विशेष अधिकार है।

3. परमेश्वर का वचन

"आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।"

(मत्ती 24:35)

यह भी देखो–यसायाह 40:8

"तब यहोबा ने मुझसे कहा, तुझे ठीक दिखाई पड़ता है, क्योंकि मैं अपने वचन को पूरा करने के लिए तैयार हूं।।"

(यिर्मयाह 1:12)

उसका वचन हमेशा सच्चाई के लिए खड़ा है। विश्वास आता है जब परमेश्वर एक विशेष वचन देता है–सभी के लिए उसने सदा कहा हमें सीधा अपनी परिस्थितयों (हालातों) में। इस रास्ते में क्या है, परमेश्वर का वचन हमें जीवित ही आता है, हमारे विश्वास को मुक्ति देता है।

(घ) विश्वास कैसे कार्य करता है

विश्वास का सिद्धान्त (रोमियों 3:27) हमारी जान को लगातार चलाए रखता है: कोई बात नहीं "क्यों जो विश्वास से चलते हैं, न कि देखने से।"

जिस तरह हम याकूब 1:56 में भी देख सकते हैं कि विश्वास का होना कोई दोष नहीं है। इसका अर्थ होगा परिस्तितियों (हालातों) के होते हुए। विश्वास इन दिशाओं में कार्य करता है।

1)परमेश्वर हमें विश्वास देता है

"क्योंकि उस में परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से, और विश्वास के लिए प्रगट होती है, जैसे लिखा है कि विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा।।"

(मिलाएं रोमियों 1:17को हबक्कक 2:4)

"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हार उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं वरन परमेश्वर का दान है।"

"ओर न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।"

(इफिसियों 2:8,9)

"क्योंकि मैं उस अनुग्रह के कारण जो मुक्त को मिला है, तुम में से हर एक को कहता हूं, कि जैसा समझना चाहिए, उससे बढ़कर कोई भी अपने आप को न समझे पर जैसा परमेश्वर ने हर एक को परिमाण के अनुसार विश्वास दिया है, वैसा ही सुबुद्धि के साथ अपने को समझे।"

(रोमियों 12:3)

2)विश्वास आता है परमेश्वर के वचन से

पहल, परमेश्वर हमारी हिम्मत बढ़ाता है अपने कहें हुए "वचन" द्वारा जो हमारी परिस्थितयों (हालातों) से संबंधित है। यह आ सकता है जिस तरह आप बाईबल पड़ते हो और पवित्र आत्मा की आवाज़ सुनने से जो हमारी आत्मा में हैं।

"सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।"

(रोमियो 10:17)

देखो परमेश्वर ने किस तरह इब्राहम से कहा उत्पत्ति 15:2-3, 17: 15-21 में तथा होशे में होशे 1:8 में।

3)वचन की आज्ञाकरी

विश्वास के लिए हमें परिस्थिति (हालात) में चलाने के लिए हम उस वचन की पालना जरूर करते हैं, हमें वचन की गहराई में जाना तथा विश्वास का फल हमारे कर्मों तथा हमारें जवाबों में साफ होना चाहिए।

विश्वास प्रभावशाली है, निष्काये नही हैं, परमेश्वर के बहुत सारे वायदे शर्तो के ऊपर निर्भर है। वह उसका हिस्सा करेगा तथा हम अपना हिस्सा करते है।

वैस ही विश्वास भी, यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है।

(याकूब 2:17)

इसे भी ध्यान से पढ़ें तथा उन बातों को लिखे जो विश्वास से विकसित हैं।

याकूब 1:22-25_____

उत्पत्ति 15:6_____

मत्ती 7:24-27_____

4)संकट का समय या हमारे विश्वास का चिन्ह

यह परखने का समय है। सब कुछ हमारे इर्द-गिर्द होता है परमेश्वर ने जो कहा है उसके विरूद्ध प्रगट होता है। यह हमारे विश्वास की कुदरती गवाही प्रतीत

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

नहीं होती। इस विषय पर, हमारा विश्वास पूरी तरह परमेश्वर के विश्वास ऊपर निर्भर है। (जो उसने हमें कहा है)।

"और इस कारण तुम मगन होते हो, यद्यपि अवश्य है कि सब कुछ दिन तक नाना प्रकार की परीक्षाओं के कारण उदास हो।"

"और यह इस लिए हैं कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास जो भाग के ताए हुए नाशमान सोने से भी कहीं अधिक बहुमूल्य हैं, यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा, और महिमा, और आदर का कारण ठहरे।"

(1 पतरस 1:6-7)

देखें-रोमियों 4:16-21 तथा भजन संहिता 103:17-19

विश्वास में हम खुद को उसकी वफादारी के ऊपर पाते हैं। हमारे दोष तथा संघर्ष के समय में परमेश्वर वफादार है तथा हमें नहीं छोड़ता।

"यदि हम अविश्वासी भी हों तो भी वह विश्वासयोग्य बना रहता है, क्योंकि वह अपना इन्कार नहीं कर सकता।"

(2 तीमुथियुस 2:13)

यह भी देखें - (इब्रानियों 13:5)

5) परिणाम

अंत में परिणाम सदा जीत ही है विश्वासी के हिस्से के ऊपर, जो परमेश्वर की महिमा से आता है। इस वचनों को देखें तथा विश्वास के परिणाम को लिखे

क याकुब 1:2-4,12_____

ख भजन सहिता 105:19-22_____

ग प्रेरितों के कार्य 3:16_____

घ इब्रानियों 6:13-15_____

"क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है, और वह विजय जिस से संसार पर जय प्राप्त होती है, हमारा विश्वास है।"

(1 यूहन्ना 5:4)

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

मेरी गवाही

आज मैं विश्वास द्वारा जीवित तथा अपनी जिन्दगी के सभी मार्गों में परमेश्वर के ऊपर विश्वास करने का फैंसला कर लिया है। मैंने स्वीकार किया है मेरी जरूरत पूरी तरह परमेश्वर के ऊपर निर्भर हैं- जो विश्वास के काम में है। समस्याओं, चुनौतियों तथा कठिनाइयों में मैं उसकी वफादारी के ऊपर निर्भर करूंगा। परमेश्वर का जवाब उसकी आशीष होगी-उसकी योग्य बनाने वाली शक्ति। मैं दूसरो को बताऊंगा कि किस तरह परमेश्वर की वफादरी के ऊपर निर्भर करना तथा परमेश्वर में विश्वास के साथ चलना।

दिया गया कामः-

1. अपनी विश्वासी जिन्दगी को परखो। आप कितना उस समय से बढ़े हो, जब से आप बचाए गए हो? कि आपने परमेश्वर के ऊपर विश्वास किया है उस वायदे के साथ जो उसने आपको कहा? पीछे देखे उस वायदे के ऊपर जो उसने आपको दिया है तथा आज खुद को नए तरीके से वचनबद्ध करें, उसमें विश्वास करें कि वह उन सभी को पूरा करने योग्य है जो ुसने वायदा किया है।

2. कि आपने अपने विश्वास को परखा है, यदि हां, कृपा करके इसे मंडली में बताओं । इस लिए आप इसके जरिए दूसरों की हिम्मत बड़ा सकते हो।

याद रखने योग्य वचन

1 इब्रानियों (11:1)

2 याकूब (1:17)

3 गिनती (23:19)

4 यशायाह 40:8

5 अय्यूब (42:2)

6 याकूब (2:17)

7 रोमियों (10:17)

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

बाइबिल अध्ययन-10: आशीष

आशीष शब्द का अर्थ ईसाई धर्म में अभी तक भी पूरी तरह नही समझा गया है। इस शब्द का अर्थ समझने के लिए इसका अध्ययन करना जरूरी है। और यह जानने के लिए की यह शब्द किस तरह हमारी जिन्दगी को खुशीयों से भरता है।

और प्रेरित बड़ी सामर्थय के साध प्रभु यीशु के पुनरूस्थान की साक्षी देते थे, और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था।

(प्रेरितों के कार्य 4:33)

वहाँ से वह जहाज़ द्वारा अंताकिया गए, जहाँ वे परमेश्वर के अनुग्रह से ुस कार्य के लिए सौपे गए जिसे उन्होंने पूरा किया था।

(परितों के कार्य 14:26)

इसाई धर्म की शुरूआत में परमेश्वर का आर्शीवाद इतना महत्वपूर्ण क्यों था। अंताकिया की चर्च में होने वाली प्रार्थना में परमेश्वर ने पोल और बरनावस पर होगा और बाद में पोल और सीलास पर जब वह उद्देश्य की प्राप्ती के लिए निकलेगें।

(क) आशीष का अर्थ

आशीष का साधारण शब्दों में आशीष शब्द का अर्थ परमेश्बर की अपार कृपा है। दूसरे शब्दों में अगर हम पापी हैं, सजा के हकदार हैं, परमेश्वर हम पर प्यार दिखाता है, और हमें माफ कर देता है।

यह भी इसका अधूरा अर्थ है आशीष का दूसरा अर्थ परमेश्वर की करने की शक्ति है।

अब स्वयं हमारा प्रभु यीशु मसीह तथा पिता परमेश्वर जिसने हमसे प्रेम किया और अनुग्रह से अनन्त शान्ति तथा उत्तम आशा दी है,

तुम्हारे हृदयों को भलाई के प्रत्येक कार्य तथा वचन में दृढ़ करे और शान्ति दे। (2 थिस्सलुनीकियों 2:16,17)

परमेश्वर का आशीष न केवल हमें परमेश्वर के परिवार में सम्मलित करता हैं बल्की हमें इसाई धर्म के अनुसार जीने की शक्ति भी देता है। दो धार्मिक पुस्तकें परमेश्वर पर विश्वास रखने वालो में परमेश्वर के आशीष के दो पक्षो को पेश करती है।

1. परमेश्वर की अपार कृपा

क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है–और यह तुम्हारी ओर से नही वरन् परमेश्वर का दान है,

यह कार्यो के कारण नही जिससे कि कोई घमण्ड करें।

(इफिसियों 2:8, 9)

2. परमेश्वर की योग्य बनाने वाली शक्ति

उसने हमें जगत की उत्पति से पूर्व मसीह में चुन लिया कि हम उसके समक्ष प्रेम में पवित्र और निर्देश हों।

उसने हमें अपनी इच्छा के भले----------

(इफिसियों 1:4-6)

सारे पाठ को पढ़ो जिस तरह यह दर्शाता हैं कि हमने सब कुछ उसकी आशीष के द्वारा प्राप्त किया हैं (उसकी योग्य बनाने वाली शक्ति के द्वारा)

मुक्ति में न केवल परमेश्वर की आशार कृपा प्रकट होती है। जिसमें हमें उसके द्वारा न केवल माफी प्राप्त होती है बल्कि हम उसके साथ वह सम्बन्ध बनाते हैं जिसके हम योग्य नहीं है। बल्कि वह शक्ति भी होतो है जिसके द्वारा हम उस मुक्ति को प्राप्त कर पाते हैं।

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है। पुरानी बातें बीत गई। देखो, नई बातें आ गई हैं----------

(2 कुरंथियों 5:17)

आशीष का यह सिद्धान्त हमारे परमेश्वर के साथ सम्बन्धों के साथ चलता रहता है। हमारे ईसाई धर्म के क्षेत्र में यह परमेश्वर का आशीष हैं जो हमारी शक्ति और विकास का कारण हैं- हमारे गुणों और अच्छाइयों के बिना भी परमेश्वर की कृपा हम पर होती है। देखे: (2पतरस 3:18)

(ख) विश्वास के बहादुरों को आशीष दी गई

उस पर विश्वास करने वालो पर परमेश्वर का आशीष पूरी बाईबल आदमियों और औरतो की जिन्दगी पर परमेश्वर के आशीष को प्रगट करती है। परमेश्वर पर विश्वास अपनी कमीयों और अयोग्यताओ को जान कर किया जा सकता है।

यह केवल परमेश्वर की आशीष द्वारा- उसके करने शक्ति द्वारा- जो उसकी जिन्दगी में काम करती हैं। उसके द्वारा ही वह ऐसा इंसान बन सकता है जैसा कि परमेश्वर उसे बनाना चाहते है और व उद्देश्य पूरे होते है जो परमेश्वर ने उसके लिए बनाए है।

1. मूसा की जिंदगी में परमेश्वर की आशीष

निर्गमन 3:11-13;4:1-13

परमेश्वर द्वारा मूसा को दिया गया उद्देशय कोई आसान काम नहीं था। इजराईल उस समय का शासक था यह एक अत्याचारी देश था। और फारो इसका नेता था जो अपने आप को सर्वोच्च मानने का दावा करता था। दूसरे सभी देश उसके डर से जीते थे।

जब परमेश्वर ने मूसा को इजराईल मे जान और उसके तीन करोड़ लोगो की गुलामी से आज़ाद करवाने के लिए कहा तो मूसा ने अपनी कमीयों और अयोग्यताओं के बावजूद यह उत्तर दिया।

निर्गमन 3:11 मैं कौन हुँ?

3:13 आप कौन हो?

4:1 वे मेरा विश्वास नहीं करेंगे।

4:10 मैं प्रभावित करन वाला नहीं हुँ।

4:13 प्रभु, किसी और को भेजो।

परमेश्वर की आशीष से मूसा मिस्त्र गया और चमत्कारी ढंग से लोगो को परमेश्वर के कहे अनुसार आज़ाद करवाया।

2. गिदोन की जिन्दगी में आशीष

न्यायइयां 6:1-24 गिदोन की जिन्दगी पर परमेश्वर का आशीष गिदोन को परमेश्वर का आदेश मिला कि वह उसके लोगो को मिदयान की सेना के अधिकार से मुक्त करवाए काफी वर्षो तक इजराईल की हार को याद रखा गया और गिदोन का परमेश्वर के आदेश का उत्तर जो 13 verse में है उसके शुरुआती अविश्वास को प्रगट करता है।

गिदोन ने उस से कहा, हे मेरे प्रभु, बिनती सुन, यदि यहोवा हमारे संग होता, तो हम पर यह सब बिपति क्यों पड़ती? और जितने आश्चर्यकर्मो का वर्गन हमारे मिसर से छुड़ा नहीं लाया, वे कहाँ रहें? और मिद्यानियों के हाथ कर दिया है।

उस ने कहा, हे मेरे प्रभु, बिनती सुन, लैं इस्त्राएल को क्यों कर छुड़ाऊ?_____

_____(न्यायियों-6:15)

अपने डर और अयोग्यताओं के बावजुद परमेश्वर की आशीष से गिदोन ने इजराईल को बचाया और उसने यह सब कुछ थोड़े से आदमीयो की सहायता से किया यो आशीष ही है जिससे सब कुछ संम्भव है।

3. पौलूस की जिन्दगी में आशीष

प्रेरितों को कार्य 15:40 परन्तु पौलूस ने सैलास को चुन लिया और भाईयों द्वारा प्रभु के अनुग्रह में सौपें जाकर वे वहां से चल दिया।

पौलूस और सेलास ने अपनी मशीनरी यात्रा शुरू करने से पहले अतांकिया चर्च में उनके लिए प्रार्थना की।

2 कुरिन्थियों 11:22-23 में पौलूस के अनुभव के वर्णन को पढ़ो। ये समझने योग्य है कि उसन पहली बार परमेश्वर की आशीष की प्रशंसा की।

उनको बचे रहने की जरूरत है। परनेश्वर ने उत्तर दिया पौलूस का दुर्बलता को मानना उसका वायदा हमारे लिए है।

और उसने मुझ से कहा, मेरा अनुग्रह तेरे लिए पर्याप्त है, क्योंकि मेरा सामार्थय निर्मलता में सिद्ध होता है_____ (2 कुरिन्थियों 12:9)

(ग) <u>हमारी जिन्दगीयों में परमेश्वर की आशीष</u>

हमारा परमेश्वर के साथ सम्बन्ध_____ जैसे हम उसके साथ प्रत्येक दिन चलते है _____हमारा अक्सर ऐसी परिस्थितीयों से सामना होता है कि वे हमे अपने आप में समान की कोशिश करती है। हमारा परमेश्वर पर विश्वास उसके

आदेशों का पालन करने से प्रकट होता है। यह साबित करता है कि हमारा विश्वास परमेश्वर द्वारा कहे गए शब्दों में है न कि उन हालतों में जो कि प्रकट होते है। हमारे विश्वास का उत्तर वे अपने विश्वास द्वारा देता है_____यह उसकी शक्ति ही है जो हमे प्रत्येक स्थिती में जीत दिलाती है।

(घ) <u>हम आशीष के सिहांसन के स्पष्ट रास्ते है</u>

इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें,_____

_____

(इब्रानियों-4:16)

(ख) परमेश्वर योग्य हैं

और परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हे बहुतायत से दे सकता है_____

_____

(2 कुरिन्थियों-9:8)

मेरा वायदा:

आज मैं परमेश्वर का आशीष प्राप्त करने का निश्चय करता हुँ उसकी करने की शक्ति मेरे हर क्षेत्र और मुसीबत जो मेरी जिन्दगी में पैदा होती है। में परमेश्वर का आशीष काफी है मैं इस बात में पूरी तरह से विश्वास प्रकट करता हुँ।

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

दिया गया कार्य

1. क्या आप अपनी जिन्दगी के तुजरबे में समझ सके हो कि आशीष परमेश्वर की अपार कृपा के तौर पर और परमेश्वर की योग्य बनाने वाली शक्ति के तौर पर है?

2. क्या आपकी जिन्दगीं में क्षेत्र है जहां पर आप अभी तक परमेश्वर को उसकी योग्य बनाने वाली शक्ति आप में दिखाने की अनुमति नहीं दी? अगर हां, तो उन क्षेत्रों को पहचानो और उनके ऊपर उसको गवाही दो।

याद रखने योग्य वचन

1. इफिसियों-2:8,9

2. 2 कुरिन्थियों-5:17

3. 2 कुरिन्थियों- 12:9

4. इब्रानियों - 4:16

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

बाइबिल पढ़ना 11- पानो का बपतिस्मा

यीशु ने आदेश दिया है वह सभी जो उसमें विश्वास करते हैं पानी में बपतिस्मा लें।

यीशु ने उनके पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।

इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगो को चेला बनाओं और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो।

"बपतिस्मा का अर्थ है" पूरी तरह डूबना जब कोई मनुष्य अपने पापों से तोबा करता है और विश्वास करता है यीशु उसके लिए मरा तथा बहुत सारी गवाहियों से पहले उसको (आदमी या औरत) को पानी में लाया जाता हैं, उसके अन्दर किया जाता है और दुबारा उठाया जाता है। यीशु क्यों आदेश देता है कि उसके चेले अजीब काम करते है।

(क) पानी का बपतिस्मा समझना

समझना कि पानी का बपतिस्मा क्या है यह जीत तथा आज़ाद क्रिश्चन जिन्दगी की चाबी है।

पानी के अन्दर जाना तथा दुबारा इस में से उठने का काम तस्वीर प्रदशित करती है कि हमारे क्रिश्चन विश्वासियों के साथ क्या हुआ है।

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

(ख) मसीह के कामों के चार कदम

1. वह मरा_____ मैं उस में मरा।

"क्योंकि हम जानते हं हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दास्तब में न रहे।"

"क्योंकि जो मर गया, वह पाप के छूटकर धर्मी ठहरा।"

(रोमियों 6:6,7)

2. वह दफनाया गया था, _____ मैं उसके साथ दफनाया गया था।

"अथवा आप इस बात से अनजान हो भाई हम में से जिन्होंने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया उसकी मौत का बपतिस्मा लिया?"

सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाढ़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के दर मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल रखें।

3. वह जिवाया गया था_____ मैंने उसमें नई जिन्दगी प्राप्त की

"सो इस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाढ़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन सी चाल रखें।"

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

"जब हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुड़ गए तो उसके जी उठने की समानता में भी होंगे।" (रोमियों 6:4,5)

4. वह ऊपर चढ़ा_____ मैं उसमें ऊपर चढा

"और उसने हमं उसके साथ उठाया और हमें मसीह यीशु में स्वर्गी स्थानों के ऊपर उसके साथ बिठाया" (इफिसियों 2:6)

यह भी देखें (कुलिसियों 3:1)

(ग) पानी का बपतिस्मा है

1. आपकी दफनाने की क्रिया

दफनाने की क्रिया आदमी को मारना नही है। यह तब को जाती है जब मनुष्य पहले से ही मरा हुआ हो। अथवा इसलिए क्योंकि आप मसीह में मरे हुए हो। आप अपनी पुरानी जिन्दगी को पानी में दफन कर दो।

2. आपका पुर्नजीवन नई जिन्दगी के लिए

आप पानी में से उठते हो और घोषित करते हो कि आप मसीह में नई सृष्टि हो।

"परन्तु जब हम मसीह के साथ मरे तो हमे विश्वास है कि उसके साथ जीवित भी होंगे।"

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

"इसी तरह आप भी खुद को पाप की ओर से मरे हुए परन्तु मसीह यीशु में परमेश्वर के लिए जीवित समझो।"

(रोमियों 6:8-11)

(घ) दो राज्य

"उसी ने हमें अन्धकार के वश छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया।" (कुलुस्सियों 1:13)

हरेक आदमी तथा औरत दुनिया में जन्म लेता हैं अन्धेरे के राज्य में जन्म लेता है और तानाशाह शास्क शैतान की गुलामी में जन्म लेता है। इस राज्य से बाहर का कोई मार्ग नहीं- मौत को छोड़ कर तथा परमेश्वर के राज्य के लिए कोई मार्ग नहीं है, जन्म को छोड़ कर। तथा इसलिए यीशु हमारी मौत तथा नए जीवन दोनों के लिए आया और यह हम पानी के बपतिस्मा में घोषित करते हैं।

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

दो जातियां

"जिस तरह दो राज्य हैं, इस तरह हेरक राज्य में अलग जाति के लोग है। आदम जाती अंधकार के राज्य का स्थान आबाद करती और नई सृष्टि परमेश्वर के राज्य का स्थान आबाद करती है।"

1) पहले आदम

"जिस तरह आदम मैं सभी मरते हैं, उसी तरह मसीह में सभी जिलाए जाएंगे।" (1 कुरिन्थियों 15:22)

यह भी देखें (रोमियों 5:12)

आदम हम सभी का पिता था, सारी मानव जाति का। आदम के पाप ने हम सभी को परमेश्वर से दूर किया? उसके पाप के कारण, हम सभी उसकी विद्रोही तथा बुरी संगत क वारिस तथा मौत के भागी बने। "आदम की औलाद" आदम की जाति कहलाती है।

2) आखरी आदम

"जब हम निर्बल ही थे तो मसीह समय सिर के लिए मरा।" (रोमियों 5:6)

कोई मागे नही था कि परमेश्वर गिरी हुई आदम जाति को बदल सका। उसने इस जाति को खत्म किया और सारी नई मानव-जाति की शरूआत की। यीशु आखरी आदम था। वह आदम जाति के आखरी जन्म तथा नई जाति के नए जन्म पर आया। वह वहाँ आखरी आदम की क्रूस के ऊपर मरा, आदम जाति और आदम की पापी कुदरत भी मरी।

परमेश्वर नें मौत को स्थिति में रखा जो उस में गिरी हुई सृष्टि थी। आदम जाति मसीह में मरी।

3) दूसरा मानव

"जिस तरह आदम में सभी मरते हैं उसी तरह मसीह में सभी जिवाएं जाएंगे।" (1 कुरिन्थियों 15:22)

यीशु परमेश्वर के नए आदमी की तरह आया जिसके द्वारा नई जाति बनाई गई। यीशु मौत से उठा था। आखरी आदम की तरह नहीं पर दूसरे आदमी (मानव) की तरह, नई जाति का मुख्या।

ऐसे लिखा हुआ भी है जो पहला मनुष्य आदम जीवित जान हुआ, आखरी आदमी जीवन दाता आत्मा हुआ_____ _____ _____

_____

"और जिस तरह हम मिट्टी वाले का स्वरूप धारा है इस तरह स्वर्ग वाले का भी स्वरूप धारांगे।" (1 कुरिन्थयों15: 43-49)

4) नई सृष्टि

सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है। पुरानी बातें बीत गई, देखो वह नई हो गई है। (2 कुरिन्तयों 15:17)

यह भी देखें-(इफिसियों 2:10)

पानी के बपतिस्मे में हम अपने सभी मित्रों तथा जानने वालों को घोषित करते हैं कि हम लम्बे समय तक आदम जाति और अन्धकार के राज्य के हिस्से नही है। हम मसीह में नई सृष्टि, और परमेश्वर के राज्य के साथ सम्बन्ध रखते है।

प्रार्थना: धन्यवाद यीशु कि मेरा पुराना स्वभाव, मेरे पाप और न्याय के साथ मरा जब

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

आप क्रूस के ऊपर मेरे लिए मरे और, अब मैं अपनी सारी नई जिंदगी आपकी पुर्नजीवित जिन्दगी द्वारा जी सकता है।

दिया गया काम:

1) पानी का बपतिस्मा कैसे हमारे लिए जीती हुई और आज़ाद क्रिश्चन जिन्दगी का द्वार खोलता है?

2) पानी के बपतिस्मा में हम घोषित करते है कि यीशु हमारी मौत और नए जीवन दोनों के लिए आया है।

व्याख्या करों।

3) अपनी जिन्दगी को मसीह द्वारा, जीती हुई नई जिन्दगी जीने के लिए बनाओ जिस तरह उसकी नई सृष्टि और नई पुर्नजीवित जिंदगी द्वारा।

याद रखने योग्य वचन

1) मत्ती 28:18,19

2) इफिसियों 2:6

3) 2 कुरिन्थियों 5:17

4) रोमियों 6:11

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

बाईबल पढ़ना 12- पवित्र आत्मा

यीशु के मृत्यु के जी उठने के बाद, वह चालीस (40) दिन अपने चेलों के बीच में रहा। तब वह उसके आस-पास ऊंची पहाड़ी की चोटी पर इकट्ठे थे, वे इनकी आँखों के सामने स्र्वग मे उठा लिया गया।

(पढ़ो प्रेरितो के कार्य 1:1-11)

जिस प्रकार, उसके जाने से पहले, यीशु ने अपने चेलों से बहुत खास और चमत्कारी वाचदा दिया।

"और मै पिता से विनती करूँगा, और वे तुम्हे एक और सहायक देगा कि वह सदा तुम्हारे साथ रहे।"

"अर्थात् सत्य का आत्मा जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता_____ _____" (यूहन्ना 14:16-18)

"परन्तु अब मैं अपने भेजने वाले के पास जा रहा हूं_____ _____" (यूहन्ना 16:5-7

यीशु ने हमे इस दुनिया में अकेले नहीं छोड़ा है। उसने हमारे लिए पवित्र आत्मा को भेजा है।

क) <u>पवित्र आत्मा परमेश्वर है।</u>

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

पहली चीज़ हमे पवित्र आत्मा के बारे मे जरूर समझना चाहिए कि वो असल में परमेश्वर है।

"परन्तु पतरस ने कहा, हनन्याह शैतान ने तेरे मन में यह बात क्यों डाली की तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले और भूमि के मुल्य में से कुछ बचाकर रख ले? _____ _____" (प्रेरितो के कार्य 5:3,4)

यह भी देखो(2 कुरिन्थियो 3:17)

परमेश्वर मे अपने आप को मानव जाति को दर्शाने के लिए चुना है। पिता के तरह, पुत्र की तरह और पवित्र आत्मा की तरह यह तीन भिन्न पुरुषो के निशान है। पर तीनो एक है।

ख) पवित्र आत्मा का वरदान

पवित्र आत्मा प्रत्येक विश्वासी के लिए परमेश्वर का वरदान है। जब कोई मनुष्य यीशु मे विश्वास रखता है, और मुक्ति प्राप्त करता है, वो प्रदान करता है, पवित्र आत्मा जो विश्वासी मे जीने के लिए आती है और आत्मिक जीवन देती है.

"पतरस ने उनसे कह, मन फिराओ और यीशु मसीह के नाम से तुम मे से प्रत्येक बपतिस्मा ले कि तुम्हारे पापो की क्षमा हो, _____ _____"

"क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम्हारे_____"

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

"उन सब के लिए जो दूर है_____"

यह भी देखो (यूहन्ना 7:37-39)

ग) पवित्र आत्मा का कार्य

1. विश्वासी की निजी जिन्दगी में

पवित्र आत्मा विश्वासी में उसके निजी रूप के साथ सहायता करने के लिए आने के लिए रहती है।

(क) वो हमारे परमेश्वर के साथ सम्बन्ध की गवाही देतो है।

"आत्मा स्वयं_____" (रोमियो 8:16)

यह भी देखो (यूहन्ना 3:24)

(ख) वो सिखाता है

"परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम में भेजेगा_____

_____" (यूहन्ना 14:26)

(ग) वो सहायक है

"क्योंकि वे सब परमेश्वर के आत्मा द्वारा_____

_____" (रोमियो 8:14)

(घ) वो हमे परमेश्वर की तारीफ की जिन्दगी जीने के लिए मदद देता है।

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

"परन्तु मैं कहता हूं, पवित्र आत्मा के अनुसार चलो_____

_____" (गलातियो 5:16)

और यह भी देखो (आयत 17-25)

(ङ) वो हमारी प्रार्थना मे मदद करता है

"इस रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता मे सहायता करता है_____

_____" (रोमियो 8:26)

(च) वह हमारे शरीरो को जीवन देता है।

"यदि उसका आत्मा जिसने यीशु को मृतको मे से जीवित किया_____

_____" (रोमियो 8:11)

2. विश्वासी मे मदद के लिए

जिस तरह पवित्र आत्मा को विश्वासी में रहने देता है, परमेश्वर भी विश्वासी को भरना और बपतिस्मा देना चाहता है पवित्र आत्मा के साथ जो उसको दुनिया में परमेश्वर की महिमा करने का अधिकार देती है।

(क) पवित्र आत्मा गवाह को शक्ति और निडरता देता है।

परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा

_____

_____ (प्रेरितो के कार्य 1:8)

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

यह भी देखो प्रेरितो के कार्य 2:14-40

(ख) वह अलौकिक राज्य की शुरूआत करता है।

पवित्र आत्मा विश्वासीयों को सेवा के तैयार करता है अलौकिक वरदानो के साथ बहुत सारे आत्मा द्वारा दिए गए वरदानो को लिखो।

1 कुरिन्थियों 12:4, 8-10 से।

"वरदान तो विभिन्न प्रकार के है, पर आत्मा एक ही है_____"

1. _____

2. _____

3. _____

4. _____

5. _____

6. _____

7. _____

8. _____

9. _____

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

यह भी देखो प्रेरितो के कार्य 2:4, 10:46, 19:6

(ग) वह गवाही देता है कि यीशु मसीह देता है

"हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने उस यीशु को जिला उठाया_____ _____" (प्रेरितो के कार्य 5:30-32)

यह भी देखो (प्रेरितो के कार्य 4:31-33)

(घ) वो परमेश्वर के वचन के लिए नई समझ लाता है।

"पर जैसे लिखा है जिन बातो को आँखों ने नही देखा_____ _____" (1 कुरिन्थियो 2:9-10)

यह भी देखो (यूहन्ना 16:13)

(ङ) वह हमारी आत्मा को परमेश्वर की सच्ची आराधना से भरता है

"दाखरस पीकर मतवाले न बनो, क्योकि इस से लुचपन होता है, परन्तु आत्मा से परिर्पूण होते जाओ_____ _____" (इफिसियो 5:18,19)

यह भी देखें (यूहन्ना 4:24)

(च) वह यीशु की महिमा गाता है

"परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा_____

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

_____" (यूहन्ना 16:13-15)

यह भी देखो (यूहन्ना 15:26)

(छ) पवित्र आत्मा में कैसे बपतिस्मा ले

परमेश्वर चाहता है उसकी पवित्रात्मा जो (हमारे अन्दर रहती है क्योंकि आप यीशु मसीह के विश्वासी हो।) आपको पूरी तरह शक्ति से उसकी महिमा को भरें। (इफिसियों 5:18)

1) यह वरदान परमेश्वर की ओर से वायदा है इसलिए इसके बारे पूछो।

"सो यदि तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी वस्तुओं_____ _____" (लूका 11:13)

यह भी देखें (वचन 9:12)

2) परमेश्वर की महिमा की शुरूआत करनी जिस तरह आपने विश्वास में प्राप्त किया है।

"और वह बड़े आंनद के साथ यरूश्लेम लौट गए_____ _____" (लूका 24:52,53)

3) आप आलौकिक भाषा के साथ बोल सकते हो

"जब पौलूस ने उन पर अपने हाथ रखे तो पवित्रात्मा उन पर उतरा_____ _____ _____" (प्रेरितों के कार्य 19:6)

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

और पढ़ने के लिए देखें (मरकुस 16:17)

प्रेरितों के कार्य 2:4,10:45-46

1 कुरिन्थियों 14:15-18

मेरी गवाही

मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं मेरी जिन्दगी में पवित्रात्मा के वरदान के लिए मैं निर्णय लेता हूं, आज पवित्रात्मा के वरदान के लिए मैं निर्णय लेता हूं आज पवित्रात्मा की प्रोत्साहना (महिमा) और मार्ग दर्शन के पीछे चलने का। मैं पक्का निश्चय करता हूं पवित्रात्मा की आवाज़ को अपने हृदय के अन्दर सुनने वे सीखने के लिए।

दिया गया कार्य

1. इस पाठ के द्वारा अध्ययन करो, समझों, पवित्रात्मा कैसे विश्वासी की जिन्दगी के ऊपर कैसे प्रभान डालती है और इस्तेमाल करो जो आप इन क्षेत्रों में सीख चुक हो तथा आप महसूस करो आप इनके बिन रह रह हो।

2. यदि आपने पवित्रात्मा में बपतिस्मा नही लिया, अथवा आप इच्छा करते हो, प्रभु से आपको भरने के बारे में पूछो जिस तरह यह आपको आपके प्रभु के साथ चलने में अधिकार देती है।

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

3. अगला कदम वरदान को चाहना है। आत्मा का वरदान इसलिए जो आप प्रभु की अच्छी तरीके से सेवा करो।

याद रखने योग्य वचन

यूहन्ना 14:26

रोमियों 8:14

रोमियों 8:26

प्रेरितों के काय 1:8

1 कुरिन्थयों 2:9,10

लूका 11:13

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

बाईबल पढ़ना 13- प्रलोभन

क) शैतान हमला करता है

शैतान अधिकतर प्रत्येक क्रिशचन के ऊपर द्वारा हमला करता है। और वो इस हमले के दो कार्य क्षेत्र मे ध्यान रखता है

1 दुनिया की इच्छा

वो विश्वासी को दुनिया के माहौल मे बहका कर मिलाने के लिए ढूंढता है।

1. आशीष को आर्थिक बनाना की दुनिया मुख्य इच्छा प्रदान करती है।

2. इस दुनिया का सम्मान और पहचान बनाना महत्त्वर्पूण उद्देशय है।

3. अपनी सुरक्षा के आधार पर एक प्राणी के साथ उन सभी को जो दुनिया के है आराम देना।

संसार के साथ मोह न रखो, न उन वस्तुओ से जो संसार मे है। जो कोई भी संसार से मोह रखता है तो उसके दिल में पिता का प्रेम नहीं।

याकूब 4:4 कहती है हे व्यभिचारियो, क्या तुम नही जानते, की संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है? सो जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वे अपने आप को परमेश्वर का बैरी बनाता है।

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

"पढ़ो 1 तीमथियस 6:6-11 पर संतोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है_____

_____

_____"

जब हम मसीह से ज्यादा दुनिया की इच्छा करते है तो हम आर्कषण के शिकार मे गिर सकते है, जो शैतान हमारे रास्ते मे डालता है और पाप मे फेंकता है।

2. शरीर की इच्छा

मसीह के स्लीब के नाम के द्वारा, सच्चा क्रिशचन पाप के परिणाम से और पाप की शक्ति से छुड़ाया गया।

(रोमियो 6:6-14)। पर वो अभी तक शरीरिक शरीर मे रहता है ये कुदरती इच्छाओं से सम्बन्ध रखता है शैतान इनको इस्तेमाल करने की कोशिश करेगा और क्रिशचनों से पवित्र आत्मा से ज्यादा अपने आप मे महत्त्व रखवाएगा।

(रोमियो 8:5-9)

और यह भी देखो याकूब 1:14

और उनमे हम भी सभी शरीर और मन की इच्छाओ को पूरे करते हुए अपनी शरीर की कामनाओ में आगे दिन काटते थे और औरों के जैसे अपने स्वभाव के लिए गजब के पुत्र थे।

3. शैतान की असली जीत

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

यह दुनिया और शरीर के क्षेत्रो में थे कि शैतान ने पहले आदमी और पहली औरत के प्रलोभन मे जीत प्राप्त की, यह चाले उसकी आज भी है:

क्योकि जो कुछ संसार मे है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और आँखो की अभिलाषा और जीविका का घंमड, वह पिता की और से नही, परन्तु संसार ही की और से है

हवा का प्रलोभन इन आयतों के साथ मिलाओ।

उत्पति 3:6	यूहन्ना 2:16
खाने के लिए अच्छा	"शरीर की कामना"
आँखों को आकर्षक	"नेत्रो की कामना"
बुद्धि देने के लिए चाहने योग्य	"जीवन का घमण्ड"

आदम और हवा के गिरने से, सारी मानव जाति उनके शरीर के द्वारा नियन्त्रत की गई । तीन चीजें ऊपर दर्शाई गई है।

शरीर भी पाप दायक स्वभाव से बर्बाद हो गया। (गलातियो 5:19-21)

ग) जीत मसीह द्वारा दी गइ

"क्योकि हमारा ऐसा महायाजक नही, जो निब्रलताओं मे हमारे साथ दु:खी न हो सके, बरन यह सब बातो मे हमारी नाई परखा हो गया, तो भी निष्पाप निकला।" (इबरानियो 4:15)

यीशु का प्रलोभन इनके साथ मिलाओ।

लुका 4:1-13	1 यूहन्ना 2:16
पत्थर से रोटी	_____
धरती का राज्य	_____
(हैकल) मन्दिर का किनारा	_____

2. उसकी मृत्यु और पुर्नजीवन द्वारा

विश्वास उपयुक्त रीति से (दावा करता, अनुभव करता है) मसीह का कार्य क्रिशचन को उस शक्ति और राज्य से छुड़ाता है (रोमियो 8:9)

वो अब परमेश्वर की आज्ञाकारी में चलन को आजादी से चुन सकता है।

(रोमियो 6:8-14)

"क्योकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी।

इसलिए कि व्यवस्था की विधि हम मे जो शरीर के अनुसार नहीं_____ __ _____" (रोमियो 8:3-4)

घ. क्रिशचनों की लगातार जीत

मसीह द्वारा जीती गई इस अच्छी जीत की स्थापना के आधार पर, क्रिशचन अब दुशमन से प्रत्येक हमले को हरा सकता है।

यहां पर सात किस्मे है लगातार जीत की।

क) जान लो कि जीत पहले से जीती गई

उसकी स्लीब की जीत से, शैतान ने अपना बल अब क्रिशचन के इंकार में ढूंढा है।

यह होशे 4:6 मे कहा है, मेरे ज्ञान के न होने से मेरी प्रजा नाश हो गई तूने मेरे ज्ञान को तुच्छ जाना है, इसलिए मैं तुझे अपना योजक रहने के अयोग्य ठहराउंगा। और इसलिए की तूने अपने परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ दिया है, मैं भी तेरे लडकेबालो को छोड़ दूंगा।

पर जब क्रिशचन स्लीब के पूरे कार्य को और उसके जीवन में पुर्नजीवन को जानता है, तो शैतान उसके विरूद्ध प्रत्येक हथियार से मुड़ जाता है।

ख) कदम में आत्मा के साथ चलना

एक नई शक्ति क्रिशचनो में आई है- पवित्र आत्मा खुद आप, हमे दिन प्रतिदिन उसकी अंदरूनी उत्साह की आज्ञाकारी मे चलना चाहिए।

(गलातियों 5:22-25)

यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित है, तो आत्मा के अनुसार चलें भी।

(गलातियों 5: 25)

ग) प्रलोभन को स्वीकार करना यह क्या है

प्रलोभन पाप नहीं है। प्रलोभन से मुड़ने वाला

"पर यदि तुम मे से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से मांगो, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है, और उसको दी जाएगा।"

(याकूब 1:5)

यह भी देखो उत्पति 4:6-7

घ) समझो यह बच निकलने का रास्ता प्राप्त है।

"तुम किसी ऐसी परीक्षा मे नहीं पड़े_____ _____" (1 कुरिन्थियों 10:13)

अब याकूब 4:7 को देखो और बच निकलने के रास्तो को देखो

1. _____

2. _____

3. _____

सही जीवन ध्यान मे रखना

"सो जब तुम मसीह के साथ, जिलाए गए, _____ _ _____" (कुलुस्सियो 3:1-2)

देखो फिलिप्पियो 4:8,7,1 तीमूथियूस 6:11,12, 2पतरस 3:1,2

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

प्रलोभन के प्रकट क्षेत्रो से दूर रहना

"मैं किसी व्यर्थ काम पर चित्र न लगाऊगां_____

__ _____" (भजन सहिंता 101:3)

(1 तिमुथियूस 6:9-11 के जरिए पढ़ो।)

यहां प्रलोभन की चर्चा की गई है कि यहां तक कि सिद्धांत किसी को विश्वास के रास्ते से भटका सकता है?

<u>शैतान की योजनाओ से परिचित होना</u>

कि शैतान का हम पर दांव न चले, क्योकि हम उसकी युक्तियों से अनजान नहीं। (2 कुरिन्थियो 2:11)

1) तुम अपने पिता शैतान से हो और अपने पिता की लालसाओ_____

(यूहन्ना 8:44)

2) वह बड़ा अजगर अर्थात् वहो पुराना सांप_____

(प्रकाशितवाक्य 12:9)

3) _____ (प्रकाशितवाक्य 12:9)

4) _____ (मत्ती 4:1-11)

5) वो सताने वाला है (पेरितो के कार्य 10:38)

6) वो रूकावट डालने वाला है (1 थिस्सलुनीकियो 2:18)

7) _____ (1 पतरस 5:8)

8) _____ (2 कुरिन्थियो 11:14)

क्रिशचन होने के तौर पर, हम जीत मे जीने के लिए बुलाए। मसीह के द्वारा, यह जीत हमारी है।

- संसार के ऊपर (1 यूहन्ना 5:4)
- शरीर के ऊपर (गलातियो 5:16)
- दुश्मन के ऊपर (इफसियो 6:11,13)

प्रार्थना: "प्रभु, आपका और आपके वायदे का धन्यवाद मुझे परतावे के समय दौरान छुड़ाया गया। मैं अपने आप का कबूल करता आपकी मदद के लिए जो मेरे लिए सदा मौजूद है इसलिए मैं जीत मे जी सकता हूँ। "आमीन।"

याद रखने योग्य आयते:

1. यूहन्ना 2:15,16
2. 1 कुरिन्थियो 10:13
3. 1 पतरस 5:8
4. कुलिस्यो 3:1,2

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

बाईबल पढ़ना 14- संगती

क) संगती का उद्देशय

क्रिशचनों की इकठ्ठी संगती बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए ये हमारा साथ है कि

1. विश्वासीयो की हिम्मत बढ़ती और मसीह मे बढ़ते है

"क्योकि मैं तुम से मिलने की लालसा करता हूं जिससे कि तुम्हे कुछ आत्मिक वरदान दे संकू _____ _____" (रोमियो 1:11,12)

2. दुनिया जानने को आती है कि यीशु परमेश्वर का भेजा हुआ था।

"और वे महिमा जो तूने मुझे दी है मैंने उन्हे दी है, कि वे वैसे एक हो जैसे हम एक है।"

"मैं उनमे और तू मुझमे कि व सिद्ध हो कर एक हो जाए_____ जैसे तूने मुझसे प्रेम किया वैसे ही उनसे भी प्रेम किया " (यूहन्ना 17:22,23)

ख) संगती की शर्ते

1. बुनियादी गवाही एक दूसरे को

"भृात-भाव से एक दूसरे से प्रेम करो, परस्पर आदर करने में एक दूसरे मे बढ़ चलो।" (रोमियो 12:10)

बुनियादी विश्वास के बिना संगती नहीं हो सकती संगती की गहराई गवाही की गहराई के अनुसार होगी।

2. **हमारी गवाही आधारित है' एक दूसरे को प्रेम न करना के ऊपर**

एक दूसरे को प्यार न करना, एक तरफा प्यार है, जो तंग करने मे प्यार करते है, पर कारण में नही।

इसलिए यह गवाही एक दूसरे के परिवर्तनशील स्वभाव द्वारा प्रभावित नहीं होगो।

"मैं तूम्हे एक नई आज्ञा देता हूं तूम एक दूसरे से प्रेम रखो_____ _____ _____"

(यहूत्रा 13:34)

3. सच्ची संगती मसीह का प्रशासनिक केन्द्र है

हमारी एक दूसरे के साथ संगती मसीह में हमारी एक दूसरे की गवाही स्थापित है।

"जिसे हमने देखा और सुना, _____ _____ _____पिता के और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है।"

(यूहत्रा 1:3)

"तो मेरा आनन्द पूरा करने के लिए_____

_____ _____ "

(फिलिप्पियो 2:1,2)

4. प्रकाश मे चलना

हमारी संगती एक दूसरे के साथ, खुले, ईमानदार और सच्चे रहने की जरूरत को स्वीकार करती है। इनके अवसर पर मतलब हो सकते है।

क) हमारी अपने पापो को दूसरे से कबुल करवाना और प्यार से दूसरे के पाप को ढ़कना।

"यदि हम कहे कि_____ _____ _____ _____ तो हम झूठ बोलते है और सत्य पर आचरण नहीं करते।"

"परन्तु यदि हम_____वह स्वयं ज्योती मे है, तो हमारी सहभागिता एक दूसरे से है _____सब पापो से शुद्ध करता है।" (1 यूहन्ना 1:6,7)

यह भी देखो मती 18:15

ख) प्रकाश की आज्ञाकारी –परमेश्वर में मुख्य और खास उद्देशय दिए है।

ग) झूठ ढ़कना और नकाबो को हटाना

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

इसलिए बहुत सारी दुनिया की सारी संगती पांखड है- यह नाटक का कार्य है, ईमानदारी नहीं है।

"जबकि तुमने भाईचारे के निष्कपट प्रेम _____

_____" (1 पतरस 1:22)

5. दूसरो के कार्य मे असली दिलचस्पी

अपने आप के बढ़ाव के छुपे हुए उद्देशय नहीं होने चाहिए, हमारी इच्छा देने को चाहिए प्रापत करने को नहीं

"तो मेरा आनंद पूर्ण करने के लिए _____"

"स्वार्थ और मिथ्याभिमान से कोई काम न करो_____

_____"

"तुम मे से प्रत्येक अपना ही नहीं परन्तु दूसरो के हित का भी ध्यान रखो।"

(फिलिप्पियों 2:3,4)

6. दूसरो की जिन्दगी के लिए सहायता निर्धारित है।

"मेरी आज्ञा यह है_____ करो"

"इससे महान प्रेम और किसी का नही_____

_____" (यूहन्ना 15:12,13)

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

जिन्दगी मे शारीरिक जिन्दगी से भी और बहुत कुछ शामिल है। इस मे यह भी शामिल है हमारी आर्थिक सम्पति, हमारी निजी दिलचस्पी और पसन्द आदि (याकूब 2:15,16)। इसका यह भी मतलब दूसरे के लिए खुला हिस्सा देने को तैयार रहना। हम यहां तक लोगो को जान सकते है कि वो अपने आप को प्रगट करने के लिए तैयार रहे।

घ) <u>चर्च मे संगती का मतलब</u>

1. सभी चीजो को बांटना

प्रेरितो के कार्य 4:32 में तीन मजिंले है संगती मे बढ़ने के लिए- पहली, एक मन (आत्मा) से थी, तब वह एक आत्मा (दिमाग) से थी, और तब समझना कि शारीरिक विचार की इन सभी चीजों का होना समान है।

"सब विश्वासी मिल जुल कर रहते थे_____"

"व अपनी सम्पति और समान बेचकर, जैसी_____ _ _____" (प्रेरितो के कार्य 2:44)

2. उनके प्राण रख दिए (निर्धारित है)

"प्रिस्का और अक्विला को जो यीशु मसीह मे मेरे सहक्रमी है, नमस्कार"

"जिन्होने मेरी प्राण रक्षा के लिए स्वंय अपना जीवन भी जोखिम मे डाल दिया_____" (रोमियो 16:3,4)

3. सेवा मे रूचि रखने वाले भाईयों की सेवा करनी

"भाईयो तुम स्तिमनाक के कुटिम्बीयो को जानत हो कि वे अखाया के पहले कल है_____" (1 कुरिन्थियो 16:15)

4. दूसरो की जरूरत को पूरा करने का रास्ता बनाना

"तुम्हारी बहुतायत इस समय उनके अभान की पूर्ति कई_____

_____" (2 कुरिन्थियो 8:14)

5. दुख मे हिस्सा डालना

"फिर भी तुमने भला किया कि मेरे कलेश मे सहभागी हुए।"

(फिलिप्पियो 4:14)

6. बलिदान का दान

"और तीतुस के सम्बन्ध मे यह कि वह तुम्हारे मध्य मेरा साथी और सहक्रमी ह_____"

(2 कुरिन्थियो 8:23)

7. आदर सम्मान का अभ्यास करना

"हे प्रिय, तू भाईयो के जो कुछ कर रहा है_____"

(3 यूहन्ना 1:5)

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

8. एक दूसरे का विकास करना और हिम्मत बढ़ानी

"इस प्रकार तुम्हार प्रति ममता होने के कारण_____

_____"

(1 थिस्सलुनीकियो 2:8)

यह भी देखो 2 तीमूथीयूस 3:10-14

ङ) <u>संगती के नतीजे</u>

संगती के नतीजे पहले के चर्चो मे इस तरह थे।

- परमेश्वर का डर (प्रेरितो के कार्य 2:43)
- खुशी (प्रेरितो के कार्य 2:46)
- सभी लोगो के साथ पक्ष (प्रेरितो के कार्य 2:47)
- नए विश्वासियो की जरूरत (प्रेरितो के कार्य 2:47)
- सभी जरूरते पूरी की गई (फिलिप्पियो 4:19)
- नेंतृत्व का आना (1 कुरिन्थियो 16:15,16)

प्रार्थना:- प्रभु मैं दूसरे क्रिशचनों के साथ लगातार संगती के महत्व को समझता हूं। विश्वासियों के समूह के हिस्से के तौर पर मेरी सहायता करो जो मैं मेरी वफादारी, मेरा प्यार और मेरी सेवा देता हूं आमीन

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL

याद रखने योग्य वचन

1. रोमियो 12:10

2. फिलिप्पियो 2:1,2

3. यूहन्ना 15:12,13

4. यूहन्ना 13:34

GOOD SHEPHERD MINISTRY INTERNATIONAL